भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष–10, अंक–5	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी	वार्षिक चन्दा–10.00
सोमवार, 25 मई. ' 87	मानद सहसम्पादक: डॉ. महेन्द्र दवे	प्रति अंक : 1.00

अनिर्देश के शाहसौदागर की जयंती के अवसर.....

12 जून, प.पू. काकाजी महाराज का प्राकट्य दिन अर्थात् गुणातीत समाज का परम सौभाग्य का दिन ! इस महामंगलकारी दिन अनिर्देश का यह अनोखा शाहसौदागर धरती पर अवतरित हुआ और पतितपावनी भागीरथी-गंगा के अस्खलित प्रवाह की तरह अपनी अनुपम करूणा से ज्ञानी-अज्ञानी, विवेकी-अविवेकी, स्त्री-पुरूष, आबाल-वृद्ध, जात-कुजात, पात्र-कुपात्र अपने-पराये देखे बिना, जो भी उनके पास आया उसे प्रभु की मूर्ति देता ही रहा..., जीवन की अंतिम क्षण तक ! प.पू. काकाजी को जिस-जिसने मात्र निहारे भी होंगे हरेक की चेतना पर वह प्रथम दर्शन से ही अधिकार कर लेते थे।

दिन व रात और देह को देखे बिना असीम धीरज रखकर भक्तों के लिये अनहद् भजन व अविरत परिश्रम करने वाला यह अनोखा चैतन्यशिल्पी स्थूल रूप से हम सबके बीच में से यकायक स्वतंत्र रूप से विदा तो हुआ, पर अद्भूत, असाधारण, अद्वितीय जीवन जीकर उन्होनें ऐसा आदर्श स्थापित किया है कि सारी मानवजाति युगों-युगों तक उस परम दिव्य विभूति की ऋणी रहेगी तथा गुणातीतसमाज के इतिहास में सदियों तक प.पू. काकाजी का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा।

बचपन से ही खूब शूरवीर व महत्वाकांक्षी...11 वर्ष की आयु में ही ब्र.स्व. शास्त्रीजी महाराज के मुँह से ये कहते सुना कि 'अगर सत्संग करना है तो पहले मर कर आओ।' इन्हीं शब्दों से इस शूरवीर योद्धा ने अपने दिव्य जीवन की जंग खेलनी शरू की। पात्र बदलते रहे, समाज बदलता रहा–पर माया का प्रतिकार करते हुए व अकेले खेलदिली से जीवन के अंत तक लड़ते ही रहे। शुक्राचार्य के संजीवनी मंत्र को ही तो उन्होंने अपना जीवन मन्त्र बनाया था–

डरना नहीं, झुकना नहीं, हटना नहीं,
लड़ाई करनी सदा सर्वदा।
अजय में व विजय में
और आखिरकार–
इस लोक में परलोक में !''

उन्हें केवल एक ही लगन थी–गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज के स्वप्नों को साकार करने की। योगी और योगी-परिवार ही उनकी नस-नस में सदा धड़कता रहा। जीवन की अंतिम क्षण तक भजन, कथावार्ता, जपयज्ञ, सुहृद्भाव, मैत्रीभाव की बातों का सतत् प्रवाह अविरतरूप से बहता ही रखा। वास्तव में हम आज जो आनन्द व मस्ती के झूले में झूल रहे हैं उसकी आधारशिला व सर्जनहार तो प.पू. काकाजी ही थे। प.पू. काकाजी का जीवन वैसे खूब साधारण हम जैसा ही लगता था, पर उनका असली स्वरूप खूब गहन, भव्य और हमारी मर्यादित बुद्धि व कल्पना से परे का था। स्वरूपानुभूति होने से भी पहले 1951 में प.पू. पप्पाजी को विदेश से लिखे एक letter में इन्होंने स्पष्ट लिखा था कि–

'मुझे क्षणिक सुख नहीं, बल्कि शाश्वत् सुख, शांति, आनंद चाहिए। मुझे limited light नहीं, मुझे तो तेजोमय धाम देखना है।'

अपने स्वरूप की स्वयं को पहचान हो, तब ही तो ऐसे शब्दों लिखे जा सकते हैं न?

दूसरी ओर, आज जब प.पू. काकाजी की जयंती नजदीक आ रही है, तब एक बात याद आती है–

ब्रह्मस्वरूप प.पू. भगतजी महाराज के लिए कहा जाता था कि भगतजी महाराज को जिसने देखा ही न हो, वह कैसे पहचाने कि यह भगत जी हैं? तो

– सत्संग में जिसका अपमान होता रहता हो,

– जिसका कहा हुआ 'जय स्वामिनारायण' भी कोई स्वीकार न करता हो

और तब भी–

– दो हाथ जोड़कर, खूब महिमा से गरजू बनकर सेवा ही करता दिखाई पड़े, उसे मान लेना कि वह भगतजी है।

यह बात तो हमने सुनी ही है, परन्तु प.पू. काकाजी का ऐसा संघर्षपूर्ण और अनोखा जीवन हम सबने अपनी नजरों से देखा !

* जो संस्था की हर प्रकार से सेवा करने में कुछ भी देखे बिना–परवाह किए बिना तन, मन, धन सब कुछ न्यौछावर कर दिया–

* उसी संस्था ने उन्हें विमुख करके दूर किया और कई कितने आक्षेपों की बौझार की,

* केवल भला ही हो इस भावना से ही जिनके श्रेयार्थ के लिए ही हमेशा लगे रहे–

* उन्होंने ही उनकी उपेक्षा करी,

* जिनके कठिन रास्तों में उन्होंने फूल बिछाए–

उन्होंने ही इनकी राह में कांटे खड़े किए,

* भगवे कपड़े छोड़कर घर जाने के लिए तैयार जो संतों के लिए स्वयं गलत दिखाई देने पर भी, उनका खुला पक्ष रखकर उन्हें भगवे कपड़ों में टिकाए रखा और मानो जीवनदान दिया–

उन्होंने ही इनका विरोध करा, अपमान करा और इनका नामोनिशान तक भूला देने पर तुले !

* जिन्हें पाल पोस कर चैतन्य भूमिका में अखंड रहते करने उन्होंने झंखना करी और स्वयं की समकक्षा के ही गिनवाकर सत्संग में उनकी महिमा सींची व प्रसराई–

उन्होंने ही इन्हें सौतेला माने और उन्हें अलौकिक भूमिका में झूलते गिनवाकर उनके लिए ना कहने के शब्द भी कहे !

तब भी–

इन जहर के घूंटो को अमृत समझ कर गले उतार गए और हमेशा हंसते ही रहे। इतना ही नहीं, किसी के प्रति रंचमात्र भी भावफेर करने की तो बात ही क्या? पर, उन सबके प्रति इनकी ममता में–आत्मीयता में तनिक भी फर्क नहीं पड़ा और

उन सभी के उत्थान-विकास के लिए फिर भी लगे ही रहकर अनथक् छुपा परिश्रम जिसने किया हो ऐसे तो समग्र गुणातीत समाज में एक और अद्वितीय 'प.पू. काकाजी'!

और.....ऐसे अपमान करने वालों को सामने से हार पहनाकर वड़ताल के साधु हरिस्वरूपदास जी को हार पहनाने वाले गुणातीत की असली रीति, नीति और स्थिति का प.पू. काकाजी ने प्रत्यक्ष परिचय भी कराया !

हल्दी, जरदी नव तजे, खटरस तजे न आम,
गुणीजन गुण कुं नव तजे, अवगुण न तजे गुलाम !

इनकी कई बातों को समझते हुए भी,

हम अपने अहम् का जतन करते हुए,

– अपने क्रियायोगों की ही प्रधानता रखते हुए,

– पंचविषयों की या पारलौकिक रमणीय रागों की आसक्ति रखते हुए,

उनकी बातों को हमने कई बार हंस कर निकाल दी और गिनी नहीं। वह सब उनकी नजर से बाहर नहीं था। पर तब भी वह कहते ही रहे–कहते ही रहे.....और स्वयं बोलते भी थे कि–

'ऐसे मुफ्त में कराने वाले फिर नहीं मिलेंगे...!'

तो वर्षों पहले प.पू. स्वामिजी ने प.पू. भगतजी महाराज के लिए बातें करते हुए कहा था–

'ऐसे भगतजी....! और तब भी साठ-साठ वर्ष की उनकी आयु में जो साधुसमाज ने इन्हें विमुख करा, वह समाज कैसा जड़ होगा?'

प.पू. काकाजी भी अड़सठ वर्ष तक स्थूल देह से अपने बीच में रहे और लगातार संघर्षमय जीवन जी कर एक खानदान मां का जिन्होंने नूर दिखाया उस चैतन्यजननी की हमने करी छुपी अवहेलना और अपने मन की चोरी हमारे दिल को आज कतरती (कचोटती) होगी।

हम सभी जानते थे और आज भी जानते हैं कि 'सर्वदेशियता' उन्हें खूब पसंद थी। 'सर्वदेशियता' की उन्होंने सिर्फ बातें ही नहीं करी....आम सभाओं में नारे लगाने का ही उसे विषय नहीं गिना; लेकिन उनका निजी समाज-निजी सेवकों भी उनकी इस बात की सच्चाई को परखे इसलिए स्वयं ही छोटी सी बातों पर भी–सेवकों की तनिक भी परवाह किए बिना–सेवकों की ऐसी पक्षदारी रखने में या मोहब्बत में फंसे बिना सर्वदेशियता से भरा ही जीवन जीकर; 'हम यदि सर्वदेशीयता रखेंगे तो ही प.पू. काकाजी राजी होंगे'–इस बात का सेवकों के दिल में ही नहीं–बल्कि जीव में छोंक कर दिया !

इनका जीवन जिन जिन्होंने भी नजदीक से निहारा होगा या कभी कुछ इनके पास कुछ अलगता या भेदभाव की बात करने गए होंगे, उन पर तब जो डांट या कथावार्ता की बारिश हुई होगी–वह सेवक या सेवकगण को कभी भी ऐसी भ्रान्ति नहीं रह सकती कि–सबके साथ मेलजोल रखने काका जी को ऐसा कहना पड़ा होगा या सबकी समकक्षा पर आकर उन्हें ऐसा वर्तना पड़ा होगा....पर, हमें तो समझ रखना चाहिए कि–'स्वरूप यानि–स्वरूप–और वह एक ही हो सकता है.....' ! वह सेवक दिल से मानता होगा कि–भले ही मुझे पू. काकाजी के साथ लगाव है, पर दूसरे प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों की महिमा अगर मैं ऐसी नहीं समझूंगा तो मेरे व प.पू. काकाजी के बीच खूब दूरी रह जाएगी।

1985 में गुणातीत द्विशताब्दी के अवसर पर प.पू. बापा की न रह उनके भी जीवन के कुछ प्रसंग लिख कर देने निजी सेवकों ने जब प.पू. काकाजी को खूब आग्रह करा,तब उन्होंने जो प्रसंग लिखवाये–उसकी एक Copy पू. भरतभाई ने दिल्ली

भेजी थी। 'ब्रह्मप्रवाह' के स्तंभ में नीचे वह दिये जा रहे है। वह पढ़ेंगे तो स्पष्ट ख्याल आयेगा कि–

'मुझे अकेले ही नहीं; पप्पाजी, स्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामिजी और साहेब को भी मेरे साथ ही गिनो। यह मेरे साथीदारों भी मेरे जैसे ही है। इनके साथ सहकार से ही यह सब हुआ है। यह सब अकेले हाथों नहीं बना-यह भूलना नहीं।'

उनकी उस बात की गूंज मानो इसमें स्पष्ट सुनाई पड़ती है। खूब सोचें हम, कि–

यह प्रसंग तो उन्होंने निजी सेवकों को ही लिखवाये थे न? शिष्टाचार के रूप में समाज को दिखावे के लिये तो थे ही नहीं।

प्रसंगों को पढ़ने से ही सेवकों को स्पष्ट ख्याल पड़ गया होगा कि ऐसी सर्वदेशियता रखेंगे तो ही प.पू. काकाजी की प्रसन्नता मिलेगी और तब ही हम निर्दोष हो पायेंगे।

हरेक प्रसंग पर सर्वदेशियता से भरा इनका जीवन निहार कर.....इसी में ही उनकी प्रसन्नता जिन्होंने जानी होगी वे 'ये बड़े और ये छोटे.....' ऐसी अलगता में पड़ने की हिम्मत भी कैसे कर पायेंगे? सर्वदेशियता रखने उन्हें उपदेश देना पड़ेगा? पू. काकाजी का जीवन-वर्तन ही एक उपदेश बन गया है।

'पांच जनों की साथ में महिमा गान।' मेरी अकेले की महिमा गाओगे तो मेरी अपकीर्ति कराओगे....'

स्वामी की यह बात बार-बार पढ़वाते उन्हें सबने निहारे ही हैं।

तो इस मंगलकारी अवसर पर हे काकाजी– आपसे हमारी यही प्रार्थना है कि–आपको सर्वदेशियता खूब पसन्द थी....आप स्वयं भी एक ऐसा निराला जीवन जीये और एक आदर्श छोड़ गये हो। तो हम ऐसे व्यक्तिवाद यानी–यह प.पू. पप्पाजी यह प.पू. स्वामिजी, यह प.पू. अक्षरविहारीस्वामि.... ये छोटे, ये बड़े–इस प्रकार के मन के बहकावों में न आवें.....आपने खूब करुणा करी ही हैं, तो ऐसी भेददृष्टि का किंचित् आभास भी रहा हो वह भी आप ही टाल देना। स्वरूपों के प्रति यदि हमारी ऐसी भेददृष्टि नही रहेगी–तो प.पू. पप्पाजी और प.पू. स्वामिजी जो भावात्मक एकता गुणातीत समाज में बनाये रखने कहते है.....वह सहज ही बनी रहेगी।

तो उनकी जन्मजयंती के भव्य अवसर पर प.पू. काकाजी के चरणों में अंतर की एक और प्रार्थना कि.....

आपके प्रत्यक्ष दर्शन तो हम नादानी से उसी प्रकार खो बैठे जैसे बालक के हाथ में चिंतामणि दे दी हो। पर आप तो सागर–नहीं....'चिदाकाश' जैसे दिल के मालिक हो, तो....आज भी दिल की सच्चाई से यदि हम माफी मांग कर अंतर से प्रार्थना करेंगे, तो अब भी आप तो यही कहोगे कि–

'जाओ अब तक का सब माफ ! दुबारा ऐसा नहीं करना।' आप के ऐसे उदार दिल की आज भी हम सबको खातरी है !!

तो, आज विशेष तो क्या कहें? पर हे प्रभु आपके साथ जो हमने सलूक करा, अब तक का वह सब माफ कर देना....। अब भी आप वैसे के वैसे ही पल-पल प्रगट हो, तो अब नए प्रारब्ध हम खड़े न करें और अभेददृष्टि व अविरोधवृत्ति से व्यापक में आपकी लीला का दर्शन करें व 'स्व' का लय करके आपकी दिव्यमूर्ति के सुख में लीन हो जायें.....प्रभु रखे स्वरूपों द्वारा हम पर जो मौज लुटाई जा रही है, उसका मूल्य हम सचमुच समझें यही आपकी सच्ची जयंती मनाई कही जायेगी।

☆ ☆ ☆

ब्रह्मप्रवाह

'आराधना' में प.पू. योगीबापा ने प.पू. शास्त्री जी महाराज के चार प्रसादी के प्रसंग लिख दिये और उसका श्रद्धा से पाठ करने वाले के दोष टल जायेंगे, मोक्ष होगा और उसका आत्यंतिक कल्याण होगा एवं अंतर में सदा ही सुख, शान्ति व आनन्द रहेगा ऐसे शुभ आशीर्वाद भी दिये हैं। उसी प्रकार प.पू. काकाजी ने प्रत्यक्ष स्वरूपों के चार पांच प्रसंग लिखवाए और उसका पाठ करने व जुगाली करने को कहा। सभी प्रकार के आग्रह छोड़कर–हठाग्रह, दुराग्रह, मताग्रह छोड़कर खुले दिल से इन प्रसंगों की गुणातीत द्विशताब्दी के महोत्सव के अवसर पर जुगाली करते रहने की सबको नम्र विनती है, जिससे कि प्रत्यक्ष स्वरूपों की मर्जी के अनुसार यह दिव्य गुणातीत समाज सहज ही अखण्ड गुणातीतभाव में रहता हो जाए।

1. प.पू. बापा की आज्ञा के अनुसार मेरी प्रिय वस्तुओं को छोड़कर केवल उनकी प्रसन्नता के लिए सतत् डेढ़ महीना 1952 में देह और मन की माने बिना 18-18 घंटे काम करके प.पू. योगी बापा को राजी करने नंदाजी के एलेक्शन में सम्पूर्ण रूप से भाग लिया। ज्योतिसंघ की बहनों व ज्योतिबहन, ताराबहन वगैरा बहनों को भी बुला कर गांव-गांव घूमकर खूब परिश्रम उठाकर नंदाजी के लिए काम किया और गुरुकृपा से वे जीत गए। प.पू. योगीबापा खूब राजी हुए और केवल कृपा ही करके एक दिन का व्रत कराकर सभी वृत्तियों को घनश्याम महाराज की मूर्ति के पास ले जाकर उनमें लय कराकर पहले लक्ष कराया और बाद में अपरोक्ष अनुभव–धाम के तख्त पर बैठ सहजानन्द स्वामी एवं धरातल पर विचरण करते साक्षात् स्वरूप प्र.ब्र.स्व. शास्त्रीजी महाराज व प्र.ब्र.स्व. योगीजी महाराज ये दोनों की एकरूपता दिखाई व प्रतीत कराई...ऐसा सतत् 72 घंटे तक दर्शन कराया कि धाम में जो है वही ये प्रत्यक्ष है। प्रकरण प्रथम की पहली बात अनुसार यह हूबहू बता दिया। इसके पश्चात वच. अमदाबाद-3 के अनुसार मुझे उपशम हो गया था, सो पू. बापा ने प्रसादी की शाल मुझे दी जो ओढ़ लेने से वेग में नहीं चला जाऊं। इस प्रकार किसी भी प्रकार के मान, बड़प्पन में लिपटने नहीं दिया और अव्यक्त राग भी निर्मूल किए, एवं ज्ञानसमाधि में रहता हुआ कर दिया।
2. प.पू. पप्पाजी मेरे पागलपन की खबर सुनकर अफ्रीका से बम्बई आए। प.पू. बापा से मिले और सारी बात का पता लगाया.....उसके बाद इस सत्संग को निहार कर जून की पहली तारीख को प.पू. पप्पाजी ने संकल्प किया कि 'बापा जिसका स्वरूप हो उस मूर्ति के ऊपर का फूल मुझे दें। सुबह पूजा में सब बापा के पास गए। पू. बापा ने महाराज की मूर्ति के ऊपर का गुलाब का फूल लेकर अपनी ऊपरी धोती में बांध लिया और बाकी के फूल सबको प्रसादी के दे दिए और वह खास लाल गुलाब का फूल बरोबर प.पू. पप्पाजी को दिया। प.पू. पप्पाजी खूब प्रामणिक और चिकित्सक। सो तुरन्त प्र.ब्र.स्व. योगीजी महाराज के प्रत्यक्ष दिव्य स्वरूप की पक्की प्रतीति जीव में हो गई और साक्षात्कार हो गया। इसी के फलस्वरूप आज पूरा गुणातीत समाज फूला-फला और खास तो बहनें और युवकों अपरोक्षानुभूति को पा गए। पू. बापा गए ही नहीं है, वे तो है-है-और हैं ही.....यह रहस्यज्ञान बापा दे गए हैं। ज्ञानस्मृति में नौ बार लिखा है। तो इस बात को दिल में धारकर, प्राण के साक्षी बन कर.....नौकार मंत्र का पांच मिनट जाप कर, तीन ही दिन इसे

पकड़े रखोगे तो सभी गुणातीतस्वरूपों के अन्तर के आशीर्वाद पाओगे और आपको भी महाराज दर्शन देकर ऐसा साक्षात् दर्शन करा ही देंगे.....तो गुणातीत द्विशताब्दी के अवसर पर 'बालक' बनकर पुकार करो या साक्षीभाव से कार्य करते हुए अर्थात्—बाहर और भीतर वृत्ति के प्रतिकार को तटस्थ भाव से देखा करो और प्रभु की एवं प्रत्यक्ष गुरुहरि की प्रेरणा होवे वैसा ही दिव्यजीवन ज्ञानसमाधि में अखंड रहकर जीओ और संबंध वालों के भी आदर्शरूप बनो।

3. गोंडल में 1961 के महोत्सव के पहले प.पू. बापा के पास हम लोग, नंदाजी साहेब और सभी महामुक्तों थे। उस समय प.पू. बापा ने मुझे कहा ''यह समैया आप संभाल लेना, मैं बीमारी ग्रहण करूँगा।'' मैंने कहा ''बापा आप बीमारी नहीं ग्रहण करना; हम सब संभाल लेंगे।'' बापा ने कहा—'भेख के दुश्मन भेख'—अतः कुछ बोलो ही नहीं। प.पू. शास्त्रीजी महाराज को याद करके काम करा करना। 200 प्रदक्षिणा करके गढ़डा का महोत्सव निपटा देना। और.....तीन महीने के बाद—उनके वहां ही ऐसा महामंगलकारी प्रसंग और—आप ही बीमारी ग्रहण करी ! पू. बालुभाई टी.टी. जशभाई झारोलावाले, हरिभाईसाहेब, डॉ. स्वामी तथा महंतस्वामी ने मिलकर इस प्रसंग को अपना मानकर 700 सेवकों ने पांच दिन तक लगातार रात भर जागकर इस महोत्सव को अच्छी तरह संभाल लिया...प्र.ब्र.स्व. प्रमुख स्वामी के साथ मिलकर भयंकर प्रसंगों में—प्रकृति के तांडव के सभी योगमाया के प्रसंगों में—बापा ने अपने स्वरूप की पहले से ही पहचान करवा दी थी.....सो तीन जने डूब गए, एक हलवे के कुंड में गिर गया फिर भी हिम्मत और धीरज रही और यह ऐतिहासिक प्रसंग अच्छी तरह केवल उनकी कृपा से निपट गया। तो अब अति बड़े पुरुषों को हम तनिक भी न झुकायें ऐसा दृढ़ संकल्प करें—मन और बुद्धि की गड़बड़ को समझ कर, अंतर से प्रार्थना करें तो महाराज और प्रत्यक्ष स्वरूपों अपने स्वरूप की जैसी है वैसी पहचान करवा देंगे। यही अंतर की अभ्यर्थना है।

4. 1965 की शरद्पूर्णिमा में गोंडल में पू. हरिप्रसादस्वामिजी को दीक्षा देनी थी। उस समय पू. बापा ने कहा कि प्रभुदास साधु होंगे तो दूसरे 51 साधु होंगे—सत्संग की खूब पुष्टि होगी। जैसी गुणातीतानन्दस्वामी को महाराज ने डभाण में दीक्षा दी थी वैसी हम उन्हें देते है। तो दादुभाई, इस प्रसंग पर जनमंगल के पाठ करवाओ और श्रीफल होमो। मैंने कहा बापा जनमंगल के पाठ तो सम्प्रदाय के लिए है। हम तो महाराज की दृढ़ निष्ठा से आपकी —प्रत्यक्ष गुरुहरि की स्मृति करके अक्षरपुरुषोत्तम का पाठ करेंगे। बापा बोले कि—है तो ऐसा ही, पर सभी ऐसे मान नहीं सकते। यूं बापा ने पाठ कराए। प.पू. बापा तो अक्षरदेरी में प.मु.प्र.ब्र.स्व. अदाश्री व वैजनाथ भाई जैसे गृहस्थों के फोटो प्रेम से रखते वह हर कोई जानेत हैं और 14 तो गुरु किए हुए थे और प्रत्येक के प्रति प्रकरण 11 की 166वीं बात के अनुसार जाने कि उनका सेवन करके दैवी गुणों को प्राप्त न किए हों ऐसा हमें सिखाया। ऐसी चैतन्य स्थिति में रहते करने प.पू. बापा ने पू. अक्षरविहारीजीस्वामिजी को दो पत्रों में अपने हाथों से लिखा था कि सभी को शास्त्रीजी महाराज जैसा बनाने हैं—भगतजी महाराज और जागा स्वामी जैसी स्थिति करानी है.....1963 में पू. जशभाई साहेब ने शास्त्रीजी महाराज की शताब्दी के प्रंसग पर पू. बापा को राजी किए

और पू. बापा ने प्रतीति कराई कि कैसे भी प्रतिकूल संजोगों में तुम शास्त्री महाराज को याद करके–प्रत्यक्ष स्वरूप की स्मृति करके कार्य करोगे तो पांच मिनट में ही अंतर्मुख होकर ब्रह्मभाव में रह कर कार्य करते हो जाओगे। और उन्हें भी अपरोक्ष अनुभूति एकांतिक के प्रसंग द्वारा करा कर विद्यानगर में उनसे ब्रह्मविद्या की कॉलेज भी शुरु हुई। आज पू. शांतिभाई, सनंदभाई, रतीभाई, पूनमभाई और विट्ठलभाई, अश्विनभाई जैसे कई युवक जगह-जगह तैयार हुए। छोटे बीज में से अनेक टहनियों में पत्ते लगे और चार डालियां खूब फली-फूली-संतों, गृहस्थों, युवकों और बहनों का यूं चार प्रकार का एक गुणातीतसमाज तैयार हुआ जो पू. बापा की ही कार्य और शक्ति का प्रत्यक्ष प्रमाण है। वेदरस के अनुसार सत्संगी का तो क्या, लेकिन कुसंगी का अभाव न आवे और सबका–अपमान करने वाले का भी भला हो ऐसी पू. बापा के चरणों में इस द्विशताब्दी के प्रसंग पर अन्तर की प्रार्थना है.....

आगे के चार दिव्य प्रसंगों की तरह इन प्रसंगों में से श्रेयार्थी साधकों 'साररूप परम रहस्य'– निकाल कर, जुगाली करके दिव्य गुणों–समता, साधुता, सरलता, सहजता, संप, सुहृदभाव, सुमेलता, निर्भयता, निर्मानीपन व निश्चिन्तता स्वामीसेवक भाव से सर्वदेशीयता दृढ़ करके समग्र सत्संगसमाज को अभेददृष्टि और अविरोध वृत्ति से निहार कर दिव्य गुणों को पायें। तो, सहजानन्दी Consciousness में अखंड रहते हो जायेंगे–यही अन्तर की प्रार्थना–

–प.पू. काकाजी महाराज

1985

अमेरिका में प.पू. स्वामिश्री का जयंतीमहोत्सव.....

प्र.ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी व मंडल विदेश के मुक्तों की प्रार्थना स्वीकार करके, विदेश भूमि को पावन करने 21 अप्रैल को बम्बई से लंडन जाने रवाना हुए... plane में भी प.पू. स्वामिजी ने अपने नियमधर्म की मर्यादा रखकर कुछ भी खाने पीने की वस्तु का स्पर्श तक नहीं किया ! प्लेन में ठाकुरजी का थाल इत्यादि किया, दंडवत् भी किए व इस प्रकार असली गुणातीत संत के सेवक भाव का दर्शन कराया !

प.पू. स्वामिजी व मंडल एयरपोर्ट से सीधे ही अनुपम मिशन ब्रह्मज्योति में पधारे.....22 अप्रैल को वहाँ wembely Hegh school में प.पू. स्वामिजी का स्वागत समारंभ रखा था। अनुपम मिशन के युवकों ने खूब श्रम करके भव्य व्यवस्था करके स्वरूपों के प्रति अपनी भक्ति अदा की। प.पू. स्वामिजी उनकी भक्ति, सेवा व उन्हें प्रभु की ओर ही निगाह रखकर खूब व्यवस्थित जीवन जीते देखकर खूब राजी हुए। विदेश की भूमि पर इतना पवित्र, स्वधर्म सहित वर्तन, सुहृदभाव व आत्मीयता भरा जीवन हरेक को सहज स्पर्श करता ही है !

लंदन से 250 किलोमीटर दूर अटलांटिक महासागर के किनारे ढाई दिन की शिविर का आयोजन था...वहां दूर-दूर के मुक्तों ने भी आकर स्वयं को धन्य किया।

विदेश के मुक्तों के आग्रह पर प.पू. स्वामिजी की 54वीं जयंती न्यूयार्क में मनानी निश्चित हुई थी....सो लंडन से प.पू. स्वामिजी न्यूयार्क पधारे.... Happy Brithday के कलरींग स्टीकरों से सुशोभित प.भ. वसंतभाई (नावलीवाले) के घर पर स्वामिश्री का निवास रहा।

न्यूयार्क के जूनियर हाई स्कूल के हाल में प.पू. स्वामिजी की जयंती खूब धूमधाम से मनाई....अमेरिका के शिकागो, इन्डिया, न्यूयार्क, न्यूजर्सी, पेन्सिलवेनिया, वाशिंगटन, मेरीलेण्ड, ओहावो, नोर्थ केरीलीना, एटलान्टिक सीटी, टेक्सासा, फ्लोरीडा, केलीफोर्निया वगैरा राज्यों से भी हरिभक्तों दर्शन आशीर्वाद का लाभ लेने आए। प.पू. स्वामिजी के आसन के पीछे सूर्य का प्रतीक दिया गया था। अर्थात् सच्चा संत सूर्य के समान ही बिना किसी भेद हरेक को प्रकाश देता ही रहता है व आत्मा की उन्नति के लिए, शाश्वत सुख, शांति, आनन्द के लिए सूर्य समान सच्चे संत का जीवन में होना अत्यधिक आवश्यक है।

और इस महामंगलकारी अवसर पर प.पू. स्वामिजी ने आशीष प्रवचन में सच्चे संत का लक्षण बताकर प.पू. बापा के जीवन का अनुपम दर्शन कराकर आशीर्वाद बरसाए व हरेक को आनंद विभोर कर दिया।

प.पू. स्वामिजी की इस जन्मजयंती के आयोजन में प.भ. अंबुभाई, प.भ. दिनकर भाई–शिकागो, प.भ. महेन्द्रलाल, प.भ. महेन्द्रभाई, एटलन्टिक बीच, प.भ. सापोवार्डया साहिब, प.भ. के आर. पटेल, प.भ.किशोर भाई (कनाडा), प.भ. अरविन्दभाई गोसाई, प.भ. शांतु भाई, प.भ. प्रवीणभाई सोलंकी, प.भ. घनश्याम भट्ट, प.भ. दिलीपभाई (ओड), प.भ. भरतभाई, प.भ. रमेशभाई, प.भ. चन्द्रकांत (ओड), प.भ. ललितकाका, प.भ. विजयभाई, मंगलदास (पसैक मंडल), अशोकभाई (बोस्टन) व न्यूजर्सी मंडल ने खूब भक्ति भाव से सेवा का योगदान दिया.....उसके फलस्वरूप प्रभु उनके जीवन में अक्षरधाम का सुख शांति आनन्द प्रगटाएं व हम सब की ओर से उन्हें खूब खूब धन्यवाद !!

☆☆☆

व्रतोत्सवसूची

1.	दि.	6.6.87	शनिवार	नौमी, श्री हरिजयंती
2.	दि.	7.6.87	रविवार	भगवान स्वामिनारायण स्वधामगमन दिन
3.	दि.	8.6.87	सोमवार	निर्जला एकादशी, व्रत
4.	दि.	12.6.87	शुक्रवार	ब्र.स्व.प.पू. काकाजी महाराज की जन्म जयंती
5.	दि.	21.6.87	रविवार	योगिनी एकादशी, व्रत
6.	दि.	5.7.87	रविवार	नौमी, श्री हरिजयंती

PUBLISHED By SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A 103, Ashokvihar-III, Delhi-110 052. India, Tel. 7128838
Printed at R.P.,Printers, Shahdara, Delhi-110 032